विश्व संस्कृति के आद्य-निर्माता

-प्रो. वीरसागर जैन

आधुनिक हिन्दी साहित्य के पुरोधा महाकवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी कृति 'जैन कुतूहल' में एक महत्त्वपूर्ण पद लिखा है -

"जय जय जयति ऋषभ भगवान |

जगत ऋषभ बुध ऋषभ धरम के, ऋषभ पुरान प्रमान |

प्रगटित करन धरम पथ धारत, नाना बेश सुजान |

'हरीचंद' कोउ भेद न पायो, कियो यथारुचि गान ||"

इसमें उन्होंने जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान की स्तुति करते हुए कहा है कि उनकी बारम्बार जय हो, वे ही पुराणों के प्रामाणिक आदि पुरुष हैं, उन्होंने ही जगत में सर्वप्रथम धर्मपथ प्रकट किया है, दुनिया के सब लोग अपनी-अपनी रुचि के अनुसार नाना वेशों या नामों से उनका ही गुणगान करते हैं |

सत्य में ही ऋषभदेव एक ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व हैं, जिन्हें विश्व की लगभग सभी संस्कृतियों में परमपूज्य परमाराध्य माना गया है, भले ही उसके नाम-रूप में कुछ अन्तर हो | जैसे- मध्य एशिया की संस्कृति उन्हें 'बुलगोड' (बैल वाला देवता) कहती है, जापान की संस्कृति 'राँक शब' (Rok shab)कहती है, फोनेशिया की संस्कृति 'रेशेफ़'(Reshef) कहती है और यूनान की संस्कृति 'अपोलो' (सूर्य) या 'आर्गिव' (अग्रदेव, आदिदेव) के नाम से पूजती है | इसीप्रकार कोई उन्हें 'कृषि के देवता' (कृषिकर्म सिखाने के कारण) कहता है तो कोई उन्हें 'सूर्यदेव' (केवलज्ञानी होने के कारण) के रूप में पूजता है, कोई उन्हें 'नबी' का बेटा 'रसूल' कहता है तो कोई उन्हें 'बाबा आदम' के नाम से पुकारता है |

इसीप्रकार भारतवर्ष के अनगिनत सम्प्रदाय भी उन्हें ब्रह्मा, आदिब्रह्मा, प्रजापति, विधाता, पुरुदेव, पशुपति, तिरुपति, कैलाशपति, भूतनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, नन्दीश्वर, विश्वम्भर,जटाधारी, त्रिशूलधारी, योगी, महायोगी, हठयोगी, नाथ, निर्ग्रन्थ, सिद्ध, हिरण्यगर्भ, हरि, विष्णु, महेश, महादेव, शिव, शंकर, दिगम्बर, स्वयंभू इत्यादि असंख्य नामों से नित्य स्मरण करते हैं | वेद, पुराण, इतिहास

आदि सर्व शास्त्र और देवेन्द्र, मुनीन्द्र, नरेंद्र आदि सर्व बड़े-बड़े जीव भी एक ऋषभदेव का ही नित्य ध्यान करते हैं, जैसा कि आचार्य अमितगति ने 'भावनाद्वात्रिंशतिका' में लिखा है -

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्व नरामरेन्द्रैः |

यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् || 12 ||

ऋषभदेव का उल्लेख सभी वेदों, पुराणों और शास्त्रों में उपलब्ध होता है | शायद ही ऐसा कोई प्राचीन ग्रन्थ हो जिसमें ऋषभदेव का उल्लेख न मिलता हो | महाकवि सूरदास ने भी अपने 'सूरसागर' (पंचम स्कन्ध) में ऋषभदेव का उल्लेख इसप्रकार किया है-

"बहुरि रिसभ बड़े जब भये | नाभि राज दे वन को गये ||

रिसभ राज परजा सुख पायो | जस ताको सब जग में छायो ||

रिसभदेव जब वन को गये | नव सुत नवों खंड नृप भये |

भरत सो भरत खंड को राव | करे सदा ही धर्म रु न्याव ||"

अर्थात् जब ऋषभदेव बड़े हुए तो उनके पिता नाभिराय उनको राज्य सौंपकर वन को चले गये | ऋषभदेव के राज्य में सारी प्रजा ने बहुत ही सुख पाया, अतः उनका यश सारे जगत में छा गया | इसके बाद जब ऋषभदेव बड़े होकर वन को गये तो उन्होंने भी अपना राज्यभार अपने पुत्रों को सौंप दिया | उनमें से उनके बड़े पुत्र भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम 'भारत' हुआ, क्योंकि भरत सदा ही धर्म और न्याय के मार्ग पर चलता था |

इसी प्रकार के और भी असंख्य उल्लेख मिलते हैं | कुल मिलाकर ऋषभदेव की महिमा अपरम्पार है | कहाँ तक लिखें ? 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' जैसी बात है | ऋषभदेव श्रमण संस्कृति के ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के आदि-पुरुष हैं | भारतीय संस्कृति भी क्या, वे तो विश्व संस्कृति के ही आद्य-निर्माता हैं | उनका व्यक्तित्व आकाश से भी ऊँचा और समुद्र से भी गहरा है |

अधिक क्या कहें, उनकी चर्चा अनन्त है, कभी भी कोई भी पूर्ण नहीं कर सकता, हम क्या चीज हैं, हम तो उनके चरणों में भक्तिपूर्वक बारम्बार प्रणाम करते हैं | जय हो भगवन् !